Janstta, 3 June 1994, Mumbai

गणित की विलक्षण प्रतिभा है आनंद कुमार

सुनील शर्मा

बंबई, २ जून। महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन पटना विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष स्नातकोत्तर के विलक्षण प्रतिभासंपन्न छात्र आनंद कुमार के आदर्श हैं। वह स्वयं रामानुजम की तरह गणित में नए- नए चमत्कार करना चाहते हैं। अगर मुझे सही प्रोत्साहन, उपयुक्त माहौल और विशेषज्ञों का मार्गदर्शन मिले तो मैं रामानुजम के समकक्ष पहुंच सकता हूं। मैं संख्या के गुणों के उपयोग से आधुनिक गणित को काफी समृद्ध बनाना चाहता हूं। यह बात आत्मविश्वास से भरे आनंद कहते हैं।

गणित में उनके चमत्कार को देखकर पटना के तमाम गणित के वरिष्ठ प्राध्यापक अचंभित हैं। स्थानीय बीएन कालेज के गणित के विभागाध्यक्ष बालगंगाधर प्रसाद, आनंद को रामानुजम का अवतार बताते हैं। पटना का शैक्षणिक परिवेश आनंद के लिए अब छोटा पड़ रहा है। विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा में वह खुद को परखना चाहते हैं। वे दिग्गज गणितज्ञों के साथ काम करने का मौका चाहते हैं। आनंद मानते हैं कि विश्वविख्यात गणितज्ञों के साथ काम करने से उनकी नैसर्गिक प्रतिभा को प्रोत्साहन की खुराक मिलेगी। कैंब्रिज विश्वविद्यालय उनके लिए उपयुक्त संस्थान है। यही आनंद का सपना है।

पर सपने को साकार करने में मेधावी आनंद के सामने आर्थिक समस्या बाधक बन रही है। कुछ क्षणों के लिए आनंद हतोत्साहित हो गए हैं। ''अगर मैं कैंब्रिज नहीं जा पाता हूं तो यह मेरे लिए हादसे के समान होगा।'' यह दुख आनंद का है, जिसके प्रांत के विख्यात गणितज्ञ वशिष्ट नारायण सिंह अस्वस्थ होने पर पैसों के अभाव में सही इलाज कराने से काफी दिनों तक वंचित रह चुके हैं।

कैंब्रिज विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर और अनुसंधान के लिए उनका चयन हो चुका है। एक अक्तूबर तक उन्हें किसी भी हाल में वहां नामांकन लेना होगा, अन्यथा वह एक स्वर्णिम मौका चूक जाएंगे। आनंद कैंब्रिज में प्रवेश पाने से वंचित न हों, इसलिए वह मदद देनेवालों और प्रायोजकों को ढूंढ़ रहे हैं। फिलहाल उन्हें किसी संस्थान या निजी व्यक्ति से आर्थिक सहायता का प्रस्ताव नहीं आया है। अभी वह एक प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए बंबई आए हुए हैं और मददगार ट्रस्टों की तलाश कर रहे हैं।

आनंद कहते हैं कि उन्हें खुद के बारे में कोई भ्रांति नहीं है। वे अपने राष्ट्र को गौरव प्रदान करना चाहते हैं। कैंब्रिज में जाकर भारतीय प्रतिभा का सिक्का जमाना चाहते हैं। इस विश्वविद्यालय के कई विख्यात प्रोफेसरों ने उनके निवेदन पत्र को देखते ही उनका चयन किया है। ऐसा मौका कभी-कभी आता है, जब इस तरह से किसी के आवेदन पत्र पर विचार होता है।

इंग्लैंड के शेफिल्ड विश्वविद्यालय के कई वरिष्ठ गणितज्ञ भी मात्र साढ़े बीस वर्ष के इस मेधावी छात्र की प्रतिभा से अचंभित हो चुके हैं। आनंद ने इस कम उम्र में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। गणित पर प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में आनंद के लेखों के छपने से इन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिल चुकी है। उन्होंने गणित में कई अंतरराष्ट्रीय स्तर के शोध किए हैं। वह बताते हैं कि प्रसिद्ध गणितज्ञ केएफ गांस ने गणित को विज्ञान की महारानी और अंकगणित को गणित की महारानी बताया

था। अंकगणित के ही उच्चस्तर और विस्तृत रूप को संख्या सिद्धांत कहते हैं। यह गणित का सबसे जटिल क्षेत्र है। संयोग से रामानुजम का शोध विषय संख्या सिद्धांत रहा है। आनंद ने भी इसी संख्या सिद्धांत में कई महत्वपूर्ण शोध किए हैं।

लंदन से प्रकाशित 'दी मैथेमेटिक्स गजट' में 'थ्योरी आफ डिविजिबिलिटी' पर एक समस्या का हल छपा था। यह आनंद की उपलब्धि है। 'आनंद स्क्वेयरिंग आफ द डिजिट्स आफ ए नंबर' पर आनंद का शोध पत्र लंदन के मैथेमेटिकल स्पेक्ट्रम में प्रकाशित हुआ है। इसमें आनंद ने ए पोरगस के शोध को आगे बढ़ाया है। पोरगस ने अपने शोध को केवल उन्हीं संख्याओं के लिए किया था, जिनका आधार दस हो। लेकिन आनंद ने इसे दो से नौ तक सभी आधारवाले संख्याओं के लिए किया है। बौना मैथेमेटिकल में प्रकाशित 'लिली प्रापर्टी आफ नंबर' में आनंद ने दिखाया है कि किसी संख्या के अंकों को वर्ग करके जोड़ा जाए और यही प्रक्रिया अगर बार- बार दोहराई जाए तो एक चक्र या स्थिरांक प्राप्त होता है। इन विशिष्ट उपलब्धियों के अलावा आनंद ने कई संख्याओं के गुणों को खोजा है। इनके कई शोध पत्र विदेशों में प्रकाशन के लिए विचाराधीन हैं।

विज्ञान के छात्रों के लिए गणित एक नीरस विषय माना जाता है। गणित के पेचीदे प्रश्न और संख्यात्मक सूत्र से पिंड छुड़ाने के लिए सामान्य स्तर के छात्र कन्नी काटते रहते हैं। लेकिन आनंद के लिए गणित सबसे रुचिकर विषय है। आनंद कहते हैं 'एकांत में बैठे मैं घंटों गणित के जटिल प्रश्नों को हल करता रहता हूं। असफल हो जाने पर पहले पटना के एक दो प्रोफेसरों से मदद मिल जाती थी, लेकिन अब वे भी सलाह देते हैं कि इस प्रश्न को केंब्रिज या शेफिल्ड भेज दो।'

वस्त्र, पहनावा और आडंबर से उदासीन आनंद स्वयं स्वीकारते हैं कि गणित के सिवा अन्य विषयों में वह सामान्य है। सिर्फ परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए वह अन्य विषयों को पढ़ते हैं। दसवीं कक्षा तक एक औसत दर्जे के छात्र आनंद गणित में भी साधारण विद्यार्थी माने जाते थे। नौवीं कक्षा के परीक्षाफल में उन्हें गणित में औसत नंबर मिले थे। यही औसत नंबर मेरे लिए वरदान साबित हुए। आनंद कहते हैं कि गणित में कम नंबर आने से उन्हें दुख हुआ और उन्होंने अपना पूरा ध्यान इसी पर केंद्रित कर दिया। गणित में कम नंबर पाने का कारण यह था कि वह जटिल प्रश्नों को हल करते थे और साधारण प्रश्नों को छूते तक नहीं थे।

गुरुभक्ति से ओत-प्रोत आनंद को विश्वास है कि गुरुदेवों के आशीर्वाद से वह निश्चित कैंब्रिज में प्रवेश पा लेंगे। पटना के डा. डीपी वर्मा, प्रोफेसर बालगंगाधार प्रसाद, प्रोफेसर मोहम्मद शहाबुद्दीन और संजय पाठक ने आनंद की प्रतिभा को तराशा है। बकौल आनंद, उनका सौभाग्य रहा है कि उनके प्रोफेसरों ने उनमें निजी दिलचस्पी दिखाई है। उनका दरवाजा हमेशा खुला रहता था। गणित में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे नवीन अनुसंधान के बारे में वे जानकारी देते थे। अमेरिका के मासाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नॉलाजी में भारतीय शोधकर्ता कौशल अजिताभ, आनंद को गणित का कठिन से कठिन प्रश्न भेजते रहते हैं। वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी में भी अध्यापन के लिए जाते हैं।

पटना में रामानुजम स्कूल आफ मैथेमेटिक नामक एक संस्था कार्य कर रही है। यहां छात्रों को निःशुल्क गणित पढ़ाया जाता है। कई प्रोफेसरों के अलावा आनंद भी इस संस्थान से जुड़े हुए हैं। आनंद की इच्छा है कि यह छोटा-सा संस्थान कल विख्यात विश्वविद्यालय बन जाए, जहां मेधावी छात्र अध्ययन कर सकें। आनंद आईआईटी के छात्रों को सरलता से गणित पढ़ा देते हैं।

वैसे आनंद बिहार के शिक्षामंत्री से दो बार मिल चुके हैं। उन्होंने आश्वासन दिया है कि सरकार मदद करेगी। पर आनंद बिहार सरकार की वित्तीय परिस्थिति को देखते हुए ज्यादा आशावान नहीं है। आनंद के पिता डाक-तार विभाग में कार्यरत हैं और उन्हें इस विभाग से ५० हजार रुपए की सहायता मिली है। अगर होनहार आनंद को विदेश जाने का सौभाग्य मिल जाता है, तो यह गणित के लिए सुखद होगा।